3

मनुष्य का आत्मिक स्वभाव

पवित्र आत्मा पर पिछले पाठ में परमेश्वर के आत्मिक स्वभाव पर ध्यान दिलाया गया था। इस पाठ में हम अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ होने वाले सम्बन्ध को समझने के लिए मनुष्य के आत्मिक स्वभाव की समीक्षा करेंगे।

सृष्टि की बात पर विचार करने पर, हमारा ध्यान आम तौर पर उत्पत्ति की पुस्तक के पहले दो अध्यायों की घटनाओं पर चला जाता है। परन्तु भौतिक आकाश और पृथ्वी की सृष्टि से पहले कहीं, परमेश्वर ने एक पूरी तरह अलग संसार की सृष्टि की थी। कुलुस्सियों 1:16 में पौलुस ने ऐलान किया है कि यीशु के द्वारा ''सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी।'' इस आयत में दो अलग-अलग सृष्टियों का उल्लेख किया गया है। एक स्वर्ग में आत्मिक (अदृश्य) सृष्टि है और दूसरी पृथ्वी पर भौतिक (दिखाई देने वाली) सृष्टि है।

स्वर्गदूत स्वर्ग में परमेश्वर की आत्मिक सृष्टि का भाग थे। नहेम्याह ने लिखा है, ''तू ही अकेला यहोवा है; स्वर्ग वरन सब से ऊंचे स्वर्ग ... और *जो कुछ उस में है,* सभों को तू ही ने बनाया ...'' (नहेम्याह 9:6)। भजन संहिता 33:6 में भजन लिखने वाले ने घोषणा की कि स्वर्गदूतों की स्वर्गीय सेना परमेश्वर के मुख के श्वास से बनी। ''परमेश्वर आत्मा है'' (यूहन्ना 4:24) जिस कारण हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि स्वर्गदूत परमेश्वर के सनातन, आत्मिक स्वरूप में सृजे गए आत्मिक जीव थे।

''स्वर्ग वरन सबसे ऊंचे स्वर्ग'' की आत्मिक सृष्टि के बाद, परमेश्वर ने ''पृथ्वी और जो कुछ उसमें है'' (नहेम्याह 9:6) को रचा। स्वर्गीय सृष्टि जहां आत्मिक है, वहीं पृथ्वी की सृष्टि भौतिक है। भौतिक सृष्टि में सूर्य, चांद, तारे, पृथ्वी, सभी पेड़-पौधे और जीव-जन्तु आ जाते हैं, जिनसे हमारी पृथ्वी भरी पड़ी है। आत्मिक सृष्टि के विपरीत, जिसमें ''अनदेखी वस्तुएं'' हैं और ये ''सनातन'' हैं (2 कुरिन्थियों 4:18), भौतिक सृष्टि में ''दिखाई देने वाली वस्तुएं'' हैं और वे ''अस्थाई'' हैं।

मनुष्य सृजा गया जीव है

परमेश्वर ने अपनी भौतिक सृष्टि को मनुष्य की सृष्टि से, जो उसकी विलक्षण और

सर्वोत्तम सृष्टि है, सुशोभित किया। उत्पत्ति 1:26 में हम पढ़ते हैं, ''फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।'' अपने काम को पूरा करने के लिए, ''यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा'' (उत्पत्ति 2:7)। इस अद्‌भुत, परन्तु निर्जीव शारीरिक देह में परमेश्वर ने ''... जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया'' (उत्पत्ति 2:7)।

परमेश्वर ने मनुष्य को एक अस्थाई, पशु से मिलती-जुलती शारीरिक देह के साथ बनाया। परन्तु मनुष्य में उसके स्वभाव का आत्मिक पहलू भी है, जो परमेश्वर के स्वर्गदूतों से मेल खाता है। परमेश्वर ने मनुष्य की शारीरिक देह में जीवन का श्वास फूंककर परमेश्वर के स्वभाव की सनातन चिंगारी से मनुष्य के भीतर आत्मा का सृजन किया। मनुष्य की आत्मा पर परमेश्वर के सनातन, आत्मिक स्वरूप का चिह्न है।

उत्पत्ति 2:7 हमें बताता है कि ''आदम जीवता प्राणी बन गया'' (या एक जीवित प्राण)। कई बार लोग मनुष्य के अन्दर प्राण *होने* की बात करते हैं, परन्तु बाइबल ऐलान करती है कि मनुष्य जीवित प्राणी है। परमेश्वर के स्वरूप पर बनाए गए प्राण होने के कारण, मानवीय जीव सनातन आत्माएं हैं, जो अस्थाई रूप से शारीरिक देहों में वास कर रही हैं। देहें कुछ नर और मादाएं हैं, पर हम सभी परमेश्वर के आत्मिक और सनातन स्वभाव के भागी हैं!

कई बार बाइबल मनुष्य को दोहरा प्राणी या दो भागों में बंटे हुए के रूप में वर्णित करती है। उदाहरण के लिए शारीरिक मृत्यु की व्याख्या करते हुए, सुलैमान ने लिखा है, ''मिट्टी [शारीरिक देह] ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगी'' (सभोपदेशक 12:7)। याकूब ने लिखा है कि ''देह आत्मा बिना मरी हुई है'' (याकूब 2:26)।

इन आयतों से स्पष्ट है कि मनुष्य के स्वभाव में ''बाहरी मनुष्य'' (पशुओं की तरह, थोड़ी देर का), और ''भीतरी मनुष्य'' (स्वर्गदूतों की तरह, सनातन) है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि हमें अपने मानवीय स्वभाव की समझ हो, क्योंकि मसीही होने के नाते हमें अपना ध्यान ''उन बातों पर नहीं, जो दिखाई देने वाली हैं'' (अर्थात शरीर व शरीर की बातों पर नहीं), ''बल्कि उन बातों पर जो दिखाई नहीं देतीं'' (अर्थात आत्मा और आत्मा की बातों पर) लगाना आवश्यक है; ''क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं'' (2 कुरिन्थियों 4:16-18)। जो लोग शारीरिक और आत्मिक में अन्तर नहीं कर पाते, वे अपने जीवन संसार की अस्थाई बातों पर लगाते हैं। परमेश्वर चेतावनी देता है कि इस संसार की सब वस्तुएं एक दिन ''बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाती रहेंगी'' (2 पतरस 3:10)।

मनुष्य तिहरा प्राणी है

यह सत्य है कि बाइबल आम तौर पर मनुष्य को दोहरा प्राणी (दो भाग वाला प्राणी, देह और आत्मा) के रूप में वर्णित करती है, नये नियम की दो आयतें उसे तीन भाग वाले प्राणी के रूप में दिखाती हैं। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने घोषणा की है कि परमेश्वर

का वचन इतना तेज़ है कि यह प्राण और आत्मा के बीच में से होकर उसे काट सकता है (इब्रानियों 4:12)। पौलुस की प्रार्थना में भी प्राण और आत्मा में अन्तर किया गया है कि थिस्सलुनीके के लोगों की ''आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे-पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:23)।

हमें मनुष्य की देह और आत्मा में अन्तर करने में कोई कठिनाई नहीं आती लेकिन प्राण और आत्मा में अन्तर करने में कुछ कठिनाई अवश्य आती है। प्राण और आत्मा के ''भीतरी मनुष्य'' के रूप में अनन्तकाल तक जुड़े होने के कारण, दोनों के बीच की रेखा बहुत ही बारीक है। जैसा कि हमने देखा, परमेश्वर का वचन दोनों में अन्तर करने में सक्षम है। प्राण और आत्मा में कुछ अन्तर देखते हुए, हम अपने आत्मिक स्वभाव के बारे में और अच्छी तरह से जानेंगे।

अपने अध्ययन में गहराई में जाने से पहले, आइए इस बात की समीक्षा कर लें कि हम ने अभी तक क्या सीखा है और उसे समझने की कोशिश करें। उत्पत्ति 2:7 सिखाता है कि ''यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा।'' हम इस तथ्य को इस प्रकार समझा सकते हैं:

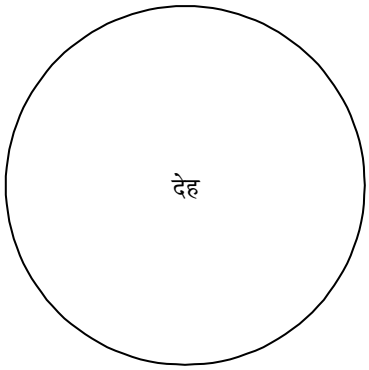

फिर, परमेश्वर ने ''उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; ...''

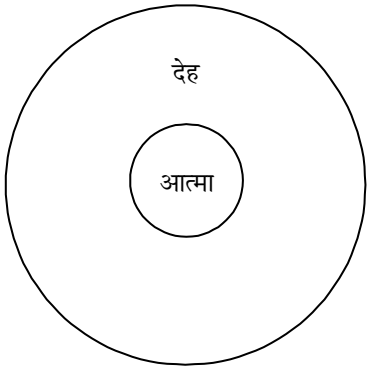

अन्त में, ''आदम जीवता प्राणी (या प्राण) बन गया।''

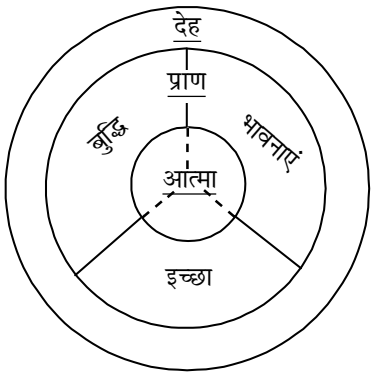

आइए ऊपर दिए गए चार्ट में उत्पत्ति 2:7 की कई बातों पर ध्यान देते हैं:

(1) मनुष्य की *शारीरिक देह* वह बाहरी खोल है, जिसमें आत्मा और प्राण (भीतरी, सनातन मनुष्य) रहता है।

(2) *प्राण* ही वास्तव में आप और मैं हैं। आत्मा यूनानी शब्द *psuche* का अनुवाद है। इसी से अंग्रेज़ी शब्द ''psyche'' निकला है। साइक मनुष्य के मन या सोचने का भाग है, जिसमें बुद्धि, भावनाएं और इच्छाएं हैं। सुलैमान ने कहा है कि ''जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा ही वह आप है'' (नीतिवचन 23:7)। अपने प्राणों के अन्दर कहीं से हम बाहरी मनुष्य (शरीर और संसार की वस्तुओं) या भीतरी मनुष्य (आत्मा और परमेश्वर की सनातन बातों) के लिए जीवित रहना चुनते हैं। इसी मूल पसन्द से एक दिन तय होगा कि हम अनन्तकाल कहां बिताएंगे।

(3) *आत्मा* परमेश्वर के स्वभाव का सनातन अंश है, जो बाहरी देह और भीतरी प्राण को जीवन देता है। मनुष्य की आत्मा परमेश्वर के आत्मा की तरह है, जिसमें यह ''सनातन, अविनाशी, [और] अनदेखी'' (1 तीमुथियुस 1:17) है। मनुष्य की आत्मा दस लाख वर्ष बाद भी ऐसी ही रहेगी, जैसी आज इस समय है। यह या तो अनन्तकाल के लिए परमेश्वर के साथ, उसकी महिमामय उपस्थिति में या शैतान के राज्य के अनन्तकालिक अन्धकार में परमेश्वर से अलग रहेगी। मसीहियत का सारा ध्यान आत्मा पर और शैतान के राज्य के अनन्तकालिक अन्धकार से उद्धार पर रहता है।

ऊपर दिए गए रेखाचित्रों से पता चलता है कि आत्मा मनुष्य की प्रकृति का सबसे गहरा और सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। ध्यान दें कि बिन्दुओं वाली रेखा प्राण और आत्मा को मिलाती है। यह बिन्दुओं वाली रेखा हमें याद दिलाती है कि प्राण और आत्मा से हमारी प्रकृति का ''भीतरी मनुष्य'' बनता है। जब सनातन आत्मा और प्राण शारीरिक देह से निकल जाता है, तो शारीरिक मृत्यु होती है (याकूब 2:26)।

मनुष्य दोहरे वातावरण में रहता है

शारीरिक देहों में रहने वाली सनातन आत्माओं के रूप में, हमारा सम्पर्क लगातार दो अलग-अलग संसारों, भौतिक और आत्मिक से बना रहता है। हमारे शरीर भौतिक संसार से घिरे हुए हैं, जो हमें ''संसार में सचेत'' कराते हैं। प्राण हमारे सब विचारों का चश्मा है, जो हमें ''अपने आप में चौकस'' करता है। आत्मा, जो मनुष्य जाति को पशुओं से अलग करती है, हमें ''परमेश्वर के प्रति सचेत'' होने के योग्य बनाती है। कृपया ध्यान दें कि पशुओं को कभी भी ''परमेश्वर का श्वास'' (तुलना करें उत्पत्ति 1:24) नहीं दिया गया, इसलिए उन में मनुष्य की तरह अपने सृष्टिकर्त्ता का आत्मिक और सनातन स्वरूप नहीं है।

1 कुरिन्थियों 3:16 में पौलुस ने परमेश्वर के पुराने नियम के मन्दिर की तुलना मसीही के तिहरे स्वभाव से की। पौलुस ने प्रश्न पूछा, ''क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?'' परमेश्वर का पवित्र आत्मा एक समय पुराने नियम वाले मन्दिर में वास करता था, परन्तु पौलुस ने कहा कि अब परमेश्वर का निवास स्थान मसीही लोग हैं।

पुराने नियम के मन्दिर का अध्ययन करके, हमें और अच्छी तरह से समझ आ सकती है कि हमने अब तक अपने पाठ में क्या सीखा है। मन्दिर को तीन भागों में बांटा गया था। बाहरी आंगन सब लोगों के लिए खुला था और यहूदी या अन्यजाति कोई भी उसमें भीतर आ सकता था। पवित्र स्थान में केवल याजक ही प्रवेश कर सकते थे। परदे के आगे परम पवित्र स्थान था, जो परमेश्वर का पवित्र निवास था और उसमें प्रायश्चित के दिन केवल महायाजक ही प्रवेश कर सकता था।

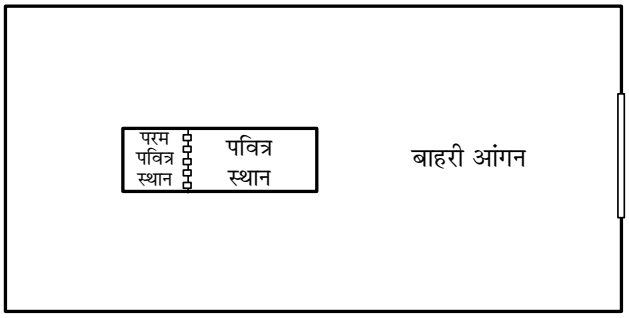

मसीही व्यक्ति के (नये नियम में प्रभु के मन्दिर के रूप में) भी तीन भाग हैं। देह (मन्दिर के बाहरी आंगन की तरह) हमारा बाहरी भाग है, जो सब देख सकते हैं। पौलुस ने मसीही लोगों को समझाया कि ''अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है'' (रोमियों 12:1)।

देह के भीतर ही प्राण रहता है (हमारी मनोवैज्ञानिक बनावट), जिसमें बुद्धि, भावनाएं और इच्छाएं भी हैं। मसीही व्यक्ति ने ''परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम'' रखने की महान आज्ञा को मान कर अपने

प्राण को प्रभु को सौंप दिया है (मत्ती 22:37)। मसीही व्यक्ति अपने भीतरी और विवेकी प्राण से प्रभु से प्रेम रखने की कोशिश करता है।

प्राण के विवेकी स्वभाव से भी गहराई में आत्मा वास करती है, जिसका सम्पर्क परमेश्वर और शैतान के अदृश्य राज्यों से हो सकता है। मसीही लोगों की आत्माएं यीशु के लहू के द्वारा छुड़ाई गई हैं और उन्हें ''उसके साथ एक आत्मा'' (1 कुरिन्थियों 6:17) के रूप में एक किया गया है। ''मसीह जो महिमा की आशा है, तुम में रहता है'' (कुलुस्सियों 1:27)।

मनुष्य पापी प्राणी है

एक आत्मा के रूप में यीशु के साथ एक होने की आशीष को समझने के लिए, हमें पाप के इतिहास की समीक्षा करनी आवश्यक है। जब आदम को पहले पहल बनाया गया था, तो परमेश्वर की तरह, वह भी पाप रहित था। परमेश्वर ने आदम को भौतिक सृष्टि पर अधिकार दिया (उत्पत्ति 1:26)। जिस कारण परमेश्वर ने मनुष्य पर अपने अधिकार की स्थिति ले ली, उसे ''भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष'' का फल न खाने की आज्ञा दी और चेतावनी दी कि ''जिस दिन'' वह उसे खाए उसी दिन मर जाएगा (उत्पत्ति 2:15, 17)।

जब तक मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा का सम्मान किया, तब तक उसे पृथ्वी पर सम्पूर्ण स्वर्गलोक का आनन्द मिलता रहा। उसके शरीर पर किसी प्रकार की कोई बीमारी या मृत्यु नहीं आई। उसका प्राण परमेश्वर के पवित्र विचारों से भरा रहता था। उसकी आत्मा अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ एक थी। ऐसे प्रेम और महिमा के बीच शैतान ने हव्वा को बहकाने के लिए यह प्रश्न पूछ लिया, ''क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?'' (उत्पत्ति 3:1)। इस प्रश्न से हव्वा का ध्यान मना किए गए वृक्ष की ओर गया। शैतान ने यह सुझाव देकर कि परमेश्वर ने उसे परमेश्वर जैसे बनने अर्थात ''भले-बुरे का ज्ञान रखने'' की बुद्धि से वंचित रखने के लिए ऐसा कहा था, प्रलोभन दिया। स्त्री ने यह देखकर कि ''उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा'' (शरीर की अभिलाषा), ''देखने में मन भाऊ'' (आंखों की अभिलाषा), और ''बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य'' (जीवन का अभिमान) है, अपने प्राण का ध्यान उसी पर लगा दिया (देखें उत्पत्ति 3:1-6; तुलना 1 यूहन्ना 2:16)। हव्वा के प्राण पर शैतान का आक्रमण हो गया था। उसका मन इस बात पर विचार करने लगा कि यदि वह उस वृक्ष का फल खा ले, तो उसे क्या मिल सकता है। भावुक होकर, वह मना किए गए वृक्ष के फल की ओर आकर्षित हो गई। अन्त में, उसने अपनी इच्छा के आगे झुककर मना किए गए वृक्ष के फल खाने की भयंकर गलती की।

वाटिका के वृक्षों में, दो वृक्ष सबसे महत्वपूर्ण थे। जीवन का वृक्ष मनुष्य को जीवन तक पहुंचाता था (उत्पत्ति 3:22)। यह वृक्ष मनुष्य की परमेश्वर पर सम्पूर्ण निर्भरता का प्रतीक था। जब तक मनुष्य ने परमेश्वर पर भरोसा रखकर उसकी बात मानी, तब तक वह इस वृक्ष से खाकर सदा के लिए जीवित रह सकता था। दूसरे वृक्ष (भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष) से मनुष्य को इच्छा की स्वतन्त्रता मिली। इस वृक्ष का फल खाकर मनुष्य अपने आप पर भरोसा रखकर, चुनकर परमेश्वर से स्वतन्त्र होने की घोषणा कर सकता था।

आदम और हव्वा ने भी इसे ही को चुना। इसका भयंकर परिणाम यह हुआ कि पाप और मृत्यु हमारे संसार में प्रवेश कर गए।

परमेश्वर ने आदम को चेतावनी दी थी कि जिस दिन वह मना किए गए वृक्ष के फल से खाए, उसी दिन मर जाएगा (उत्पत्ति 2:17)। यही ''पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था'' है (रोमियों 8:2)। बेशक आदम और हव्वा शारीरिक रूप में अपने पाप के सैकड़ों वर्ष बाद तक जीवित रहे, पर आत्मिक रूप में वे उसी दिन मर गए थे, जिस दिन उन्होंने मना किया गया फल खाया था। आत्मिक मृत्यु का अर्थ पाप के कारण परमेश्वर के पवित्र आत्मा से मनुष्य की आत्मा का अलग होना है। पाप मनुष्य की आत्मा को गन्दा कर देता है और मनुष्य के भीतर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का रहना असम्भव बना देता है (यशायाह 59:2)। परमेश्वर की आंखें इतनी पवित्र हैं कि वह पाप को देख ही नहीं सकता (हब्बकूक 1:13), और उसका पवित्र स्वभाव यह मांग करता है कि वह हर प्रकार के पाप से अपने आप को अलग रखे। वह जीवन परमेश्वर के आत्मा से अलग हो जाने पर मनुष्य की आत्मा चलती-फिरती लाश बन जाता है, जो ''अपने अपराधों और पापों के कारण मरी हुई'' है (इफिसियों 2:1)। अदन की वाटिका में अपने पाप के बाद आदम और हव्वा की यही स्थिति थी। वे संसार में शारीरिक रूप में तो जीवित रहे, पर परमेश्वर के लिए आत्मिक रूप में मर गए थे।

सब मनुष्यों को आदम के पाप के शारीरिक परिणाम विरासत में मिलते हैं (बीमारी, पीड़ा, शारीरिक मृत्यु, आदि)। परन्तु पाप के आत्मिक परिणाम (परमेश्वर से अनन्तकाल के लिए अलग रहना) केवल पाप के दोष किसी के व्यक्तिगत रूप से भाग लेने के द्वारा ही हो सकते हैं (तुलना यहेजकेल 18:20)। परमेश्वर का वचन ऐलान करता है कि ''सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:23)।

मसीह के बिना मनुष्यः

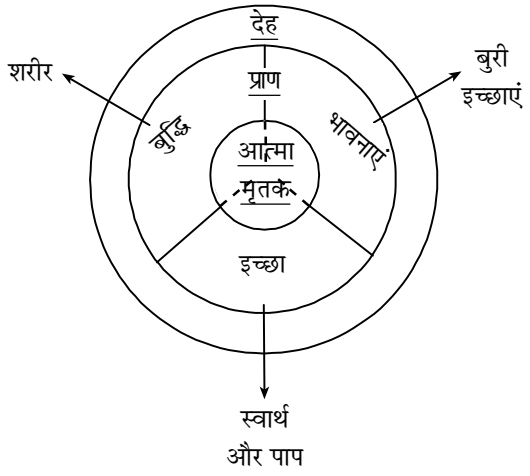

1. *बुद्धि* ''शरीर की बातों'' (रोमियों 8:5-8) और ''पृथ्वी पर की वस्तुओं'' (कुलुस्सियों 3:2) पर ध्यान लगाती है।

2. *भावनाएं* ''शरीर, और मन की मंशाएं पूरी करते'' (इफिसियों 2:3) हुए ''शरीर के कामों'' (गलातियों 5:19-21) में लगे होकर ''बुरा और अविश्वासी मन'' (इब्रानियों 3:12) दिखाती हैं।

3. *इच्छा* ''जो काम जिसको भाता है वही करते'' (व्यवस्थाविवरण 12:8), और ''भेड़ों की नाईं भटक गए ... हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया'' (यशायाह 53:6) अपने आप और पाप को समर्पित है।

4. *आत्मा* ''उस आत्मा के अनुसार चलने'' से ''जो अब भी आज्ञा न मानने वालों के कार्य करता है'' (इफिसियों 2:2), ''अपने अपराधों और पापों के कारण मरे'' (इफिसियों 2:1) होना। यह ''मसीह से अलग ... और आशाहीन और जगत में ईश्वर रहित'' (इफिसियों 2:12) होना है।

सारांश

मसीह के बाहर रहकर बिताए गए जीवन परमेश्वर के साथ विद्रोह हैं और ''पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने'' (इब्रानियों 11:25) के आगे झुक जाना है। शैतान उन्हीं लोगों के लिए सुख की पेशकश करता है, जो अपने और पाप के लिए जीवित रहने की इच्छा करते हैं, परन्तु परमेश्वर चेतावनी देता है कि ऐसे सुख स्थाई नहीं हैं और उनके हिसाब देने का समय निकट आ रहा है (सभोपदेशक 12:14)।

मनुष्य के आत्मिक स्वभाव के अध्ययन से सीखा जाने वाला महत्वपूर्ण सबक यह है कि हमें इस प्रकार से बनाया गया है कि हमारी आत्माओं में या तो परमेश्वर या शैतान का रहने के लिए स्वागत किया जाएगा। आइए हम ऐसी जीवन शैली से दूर रहें, जो अपने आप की और शैतान की सेवा करती है और परमेश्वर को अपने अन्दर रहने की अनुमति दें। अगले पाठ में हम सीखेंगे कि किस प्रकार पापी उद्धार पा सकता है कि यीशु उसकी आत्मा में रहने लगे।